(4) Peer coaching (समकक्षी अनुशिक्षण) ⇒

समकक्षी अनुशिक्षण से तात्पर्य है अध्यापक पर पड़े दबाव को कम करने के लिए विद्यार्थियों का संसाधन के रूप में प्रयोग करना। बड़ी कक्षाओं में समकक्षी अनुशिक्षण प्राय: सहपाठियों के बीच ही आयोजित किया जाता है। एक ही कक्षा / स्तर के विद्यार्थी व शिक्षक होने के कारण वे एक दूसरे को अधिक अच्छी प्रकार समझ पाते हैं।

समकक्षी अनुशिक्षण के लाभ ⇒ (1) विद्यालय में शिक्षकों की कमी होने पर अनुशिक्षण से इसकी पूर्ति हो जाती है।

(2) शिक्षकों पर कार्यभार अधिक होने पर यह अत्यधिक लाभकारी होता है क्योंकि तब अध्यापक कम ध्यान दे पाते हैं।

(3) छात्र अपने साथी छात्रों के साथ अधिक सहज महसूस करते हैं, जिससे अधिगम अधिक व अन्त:क्रियात्मक होता है।

(4) विद्यार्थी अभिप्रेरित होकर शिक्षण करते हैं तथा ~~अपने सहपाठियों जैसा बनना चाहते हैं।~~

समकक्षी अनुशिक्षण के उद्देश्य ⇒

(1) विद्यार्थी आत्मनिर्भरता से सोचने और कार्य करने के योग्य बनें।

(2) विद्यार्थियों में विभिन्न सामाजिक कौशलों (सहयोग, नेतृत्व, प्रेम) आदि का विकास करना।

(3) अधिगम हेतु स्वतंत्र वातावरण का निर्माण करना।

(4) विद्यार्थियों को शिक्षण हेतु अध्यापक निर्भरता को कम करना।

(5) विद्यार्थियों को अधिक से अधिक आत्म विश्वास प्राप्त करने में सहायता करना।

Scanned with CamScanner

समकक्षी अनुशिक्षण को सफल बनाने हेतु सुझाव :-

(1) जिन विद्यार्थियों को सहायता व निर्देशन की आवश्यकता है, उनकी सूची तैयार की जाए।

(2) जिन विद्यार्थियों की उपलब्धि अच्छी है और जो कार्य करने के लिए तैयार हों उनका चयन कर समकक्षी शिक्षण हेतु तैयार करना।

(3) शिक्षक को भी शिक्षण प्रक्रिया का पर्यवेक्षण करना चाहिए।

(4) समकक्षी शिक्षण के लिए उचित समय सारिणी तैयार की जानी चाहिए (कि शिक्षण स्कूल के बाद होगा अथवा सप्ताह में कितनी कक्षाएँ चलेंगी)

क्षेत्र - समकक्षी अनुशिक्षण एक अत्यन्त प्रभावी विधि है। इसका प्रयोग पाठ्यक्रम के सभी विषयों हेतु किया जा सकता है। इसके द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाना सम्भव है।

Scanned with CamScanner

(5) Inquiry Approach - (पूछताछ / पृच्छा उपागम) :-

पूछताछ या पृच्छा वैज्ञानिक विधि का प्रमुख चरण है. इसके अन्तर्गत प्रश्नोत्तर को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है। छात्र अपनी विभिन्न प्रकार की जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए शिक्षक से विभिन्न प्रकार के प्रश्न करता है तथा शिक्षक द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रमाणों द्वारा उनको शान्त करने का प्रयास किया जाता है।

पृच्छा की विशेषताएँ -

(1) पूछताछ / पृच्छा एक स्वभाविक क्रिया है जिसका प्रयोग बालक भाषायी विकास के दौरान करने लगता है। अपनी जिज्ञासाओं को शान्त करने हेतु इसका प्रथम प्रयोग अपने परिवार में करता है

(2) पूछताछ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग है। छात्र, शिक्षण के दौरान अनेकों प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त करता है।

(3) पूछताछ में प्रश्नोत्तर का प्रयोग अधिकता से किया जाता है। जोकि एक सरल विधि है।

(4) यह एक अत्यन्त पुरातन विधि है, वैदिक कालीन समय में भी गुरु-शिष्य के मध्य ज्ञान के आदान प्रदान का माध्यम थी।

(5) पृच्छा / पूछताछ से उच्च मानसिक कौशलों का विकास होता है।

पृच्छा उपागम की 5 अवस्थाएं (Phases of Inquiry Based Learning)

(0) Reflect (विचारना / ~~प्रतिबिम्बित करना~~)
(1) Ask (पूछना)
(2) Investigate (जाँच पड़ताल)
(3) Create (सृजन)
(4) Discuss (विमर्श / चर्चा)
(5) Reflect (प्रतिबिम्बित करना)

Scanned with CamScanner

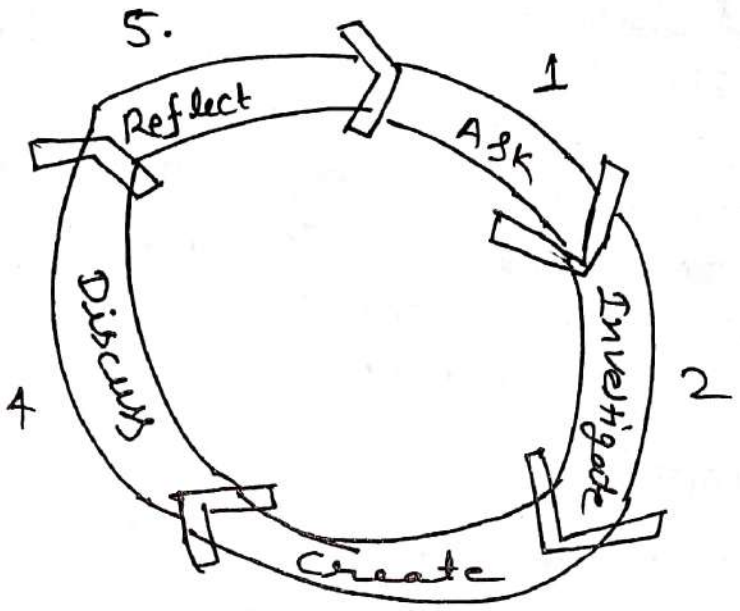

(1) Ask (पूछना) ⇒ छात्र अपने विषय से सम्बन्धित प्रश्न स्वयं बनाते हैं।

(2) Investigate (जाँच पड़ताल) ⇒ छात्र सूचनाओं का संकलन व प्रयोग करते हैं तथा उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हैं।

(3) Create (सृजन) ⇒ छात्र नये विचारों को सृजन करते हैं।

(4) Discuss (विमर्श) ⇒ छात्र अपने अपने विचारों को एक दूसरे के साथ साझा करते हैं तथा एक दूसरे के अनुभवों के बारे में पूछते हैं।

(5) Reflect (प्रतिबिम्बित करना / विचारना) ⇒ छात्र शुरुआती प्रश्नों के बारे में पुनः विचार करते हैं, जो मार्ग चुना गया तथा वास्तविक परिणामों के बारे में चर्चा करते हैं। तथा कुछ नये निर्णय लेते हैं।

क्षेत्र / प्रयोग ⇒ इस विधि का प्रयोग मुख्यतः विज्ञान विषयों में किया जाता है।

Scanned with CamScanner

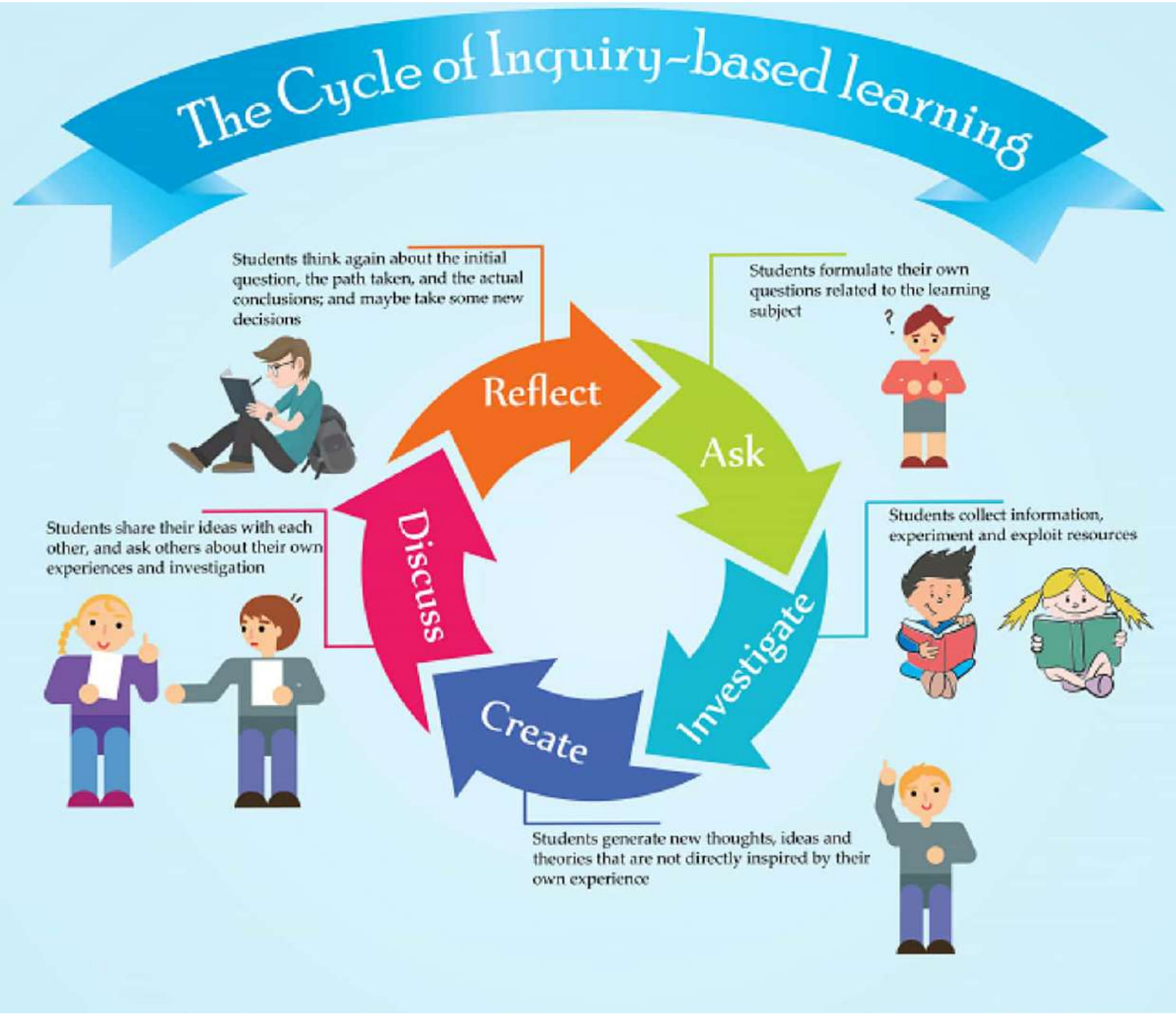

Scanned with CamScanner